767
14

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1277
10/21
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 767

201

891.431
G959S

॥ वन्देमातरम् ॥

शहीदों का सन्देश

इंकलाब की लहर

भाग चौथा

संग्रह कर्ता

गोबिन्दराम गुप्ता

प्रकाशक—पं० द्वारका प्रसाद

मार्तण्ड प्रेस देहली में छपा

[प्रथम बार १०००] मूल्य -)

76

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

भजन नं० १

जै जै प्यारी भारत माता जननी नाम तुम्हारा है।
अपनी गोद बिठाके तू पालन करे हमारा है॥

तेरे पवित्र चरणों में माता अपना शीश झुकाऊं में।
कौन से गुणो को तेरे माता यहां गवाऊं मैं॥
सर्व सुखों की दाता तू है नाम तेरा क्या प्यारा है।
अपनी गोद बिठा कर के तू पालन करे हमारा है॥
रंग बिरंगे फूल खिले हैं फलों का कोई शुमार नहीं।
मोर पपीहा खुशी से नाचें कोइल कूके डार कहीं॥
शिरपर सोहे छतर हिमालय नहीं जिसका पारावार है।
अपनी गोद बिठाकर पालन करे हमारा है॥
हुए यहां पर वेद पाठी और ऋषी ब्रम्हचारी।
प्रण को पालने वाले धर्म धर निडर धनुष धारी॥
निरमल सुन्दर प्यारी हां अमृत की गंगा धारा है।
अपनी गोद बिठाकरके तू पालन करे महाररा है॥
तुझ सेही हम बने हैं माता तुझमें ही मिल जाना है।
अदना आला जो भी हैं सबनेहां तुझमें मिलजाना है॥
"झाग" का सर क़दम तेरे पै झुकता बारम बारा है।
अपनी गोद बिठा कर के तू पालन करे हमारा है॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 767
Date 20.12.51

गज़ल

पीटते हो पैर नाहक अब ठिकाना देखलो ।
होगया आजाद भारत यह जमाना देखलो ॥
अब कदम जमते नहीं खूंखारयें के हिन्द में ।
होती आई फजर अब आशियाना देखलो ॥
अपनेही जुलमोसे तुमने हमको दी आज़ादियां ।
गैरसे ऐमाल नामा बागयाना देखलो ॥
हम खड़े हैं सामने हटना है पीछे को हराम ।
हाथ में बन्दूक ले सीन निशाना देखलो ॥
इमताहां आजादी लेनेका तुम्हें करना है गर ।
फेर तोपों के करो और बम गिराना देखलो ॥
देखलो इनसाफ लार्डडायर का पंजाब पर ।
लार्ड रीडिंग हुकमनादिर व शियाना देखलो ॥
एश हिन्दोस्तां के तुमको रहेंगे याद सब ।
आयेगा रोता हरामी माल खाना देखलो ॥

गज़ल

(तर्ज-रहरहे हैं कफ़स के कैदी ।)

पारटी अपनी कौमी बनाकर ॥

लेंगे स्वराज सुसराल जाकार ।

अबतो चमका मुकद्दर हमारा ॥

रंज गम दूर होगा हमारा ।

नारा बन्देमातरम लगा कर ॥ लेंगे० ॥

डर नहीं जेलखाने से हम को ।

काम मतलब मुरारी से हम को ॥

जाते हैं जेल खुशियां मनाकर ॥ लेंगे० ॥

जेलखाना है ससुराल का घर ।

घरसे सुसराल के मालको भर ॥

सर पर दुश्मन के डंका बजा कर ॥ लेंगे० ॥

हमतो जाते हैं अब तुम सभालो ।

काले भाई की सुनो ए कालो ॥

गोरा चमड़ा रहेंगे मिटाकर ॥ लेंगे० ॥

जेल खाना है सुसराल सब की ।

उस में जाकर के पीसेंगे चक्की ॥

नाम जिन्दों में अब हम लिखा कर ॥ लेंगे० ॥

मर्द मैदान है गांधी जी का ॥

और किचलू व जफर अली का।

हुकम गांधी जी का बजाकर ॥ लेंगे० ॥

जेल खाने का कुछ डर नहीं है।

फांसी पाने का कुछ ग़म नहीं है ॥

हमतो दुश्मन का बेड़ा डबोकर ॥ लेंगे० ॥

या इलाही हमे जो सतावे।

चैन दुनयां में हरगिज न पावे ॥

तेरी रहमत का हमराह लाकर ॥ लेंगे० ॥

गजल

तर्ज रफतार गवर्मेन्ट की

जालिम हकूमत की यह रफतार न होगी।

भारतवासी वालन्टियरों की हार न होगी ॥ टेक ॥

अवतार हो गये हिन्द में गांधी महात्मा।

फरयाद जिसकी जेल में सुनरहे परमात्मा ॥

बेरहम गोर्मेन्ट यह सरकार न होगी ॥ १ ॥

भारत को देखेंगे सभी आजाद होवेगा।

कानून ताजा हिन्द का में बरबाद होवेगा ॥

एक तरफा डिगरी कभी तय्यार ना होगी।

मालिक जो देश हिन्द का कहता गरूर क्या ॥
मांगें हकूक अपना इनका कसूर क्या ।
गांधी तेरी सच्च झूठ में सुमार ना होगो ॥ २ ॥
अपने समझ करके हमें तुम गैर क्यों करो ।
बेरहम होकर गोलियो के फैर क्यो करो ॥
भाइयों की मौत ये तुम्हें नागवार ना होगी ॥ ४ ॥

भजन

(तर्ज—दीप चन्द)

सब देशों में कहग्या गांधो जांदा २ जेलमें ॥ टेक ॥
मेरा है जंग आखिरी, जां होगा इसमें सोरी ।
भोगेगा फेर अमीरीं सब बात बणैगी मेल में ॥ १ ॥
रटते नाम हरिका रहिये, तुम कुछना किसीने कहिये ।
ना माल बिदेशी लईयो, जोतोगे तुम इस खेल में ॥ २ ॥
बारीक सूत कतवालयो, घरकी पौसाां बणवालयो ।
खद्दर पौसाक सिमालयो, ना बिकणो करियो तेल में ॥ ३ ॥
भारत देश तेरी दुशियारी, सबकी करिये ताबेदारी ।
वारन्ट तेरा हो जारी, जे ना भाज बैठिये रेल में ॥ ४ ॥

गजल नं० ३

(तर्ज-दीपचन्द)

तकड़ा होले भारत देश तेरे सिर पर गोली बरसे ॥ टेक ॥

दिल्ली सिस ताज दरबार गोली बरसी बे शुमार ।
खता बिन गवर्नमेंट सरकार आज तैं ने काढ़ रहो घर से ॥
बरसी सोलरपुर में गोली पब लिक फूंक दई ज्या होली ।
अपनी मौत आपते टोहली बैठे मरणे नैं तरसे ॥ २ ॥
मर गये बबरशेर बलवान शहर पिशावर के दरम्यान ।
लम्बा गर्दन जबर जवान डरे ना मरने के डरसे ॥ ३ ॥
फयरद हिन्द के मालिक तूहै परजा का पालिक ।
हिन्दुस्थानी डुडढे बालक जिनकी प्रीति लगी हरसे ॥ ४ ॥

हकूमत तख्त देहली पर हजारों शहनशाह करगये ।
आखरी वख्त आने पर मैदाने जंग में मरगये ॥ १ ॥
कहां रघुवंश का मालिक जिसे दिल्ली बसाई थी ।
कजा थी कैद में जिसके बली रावण से भी डरगये ॥ २ ॥
आखीरी द्वपार कलू चढते महां भूपाल पांडों थे ।
बकाया नाम वो निशान हिमालय में हरि घर गये ॥ ३ ॥
ठोकी थाम दिल्ली में शहनशाह नूर ने किल्ली ।
नूर मत हीन हो किल्ली उखाड़ी गर्भ में भरगये ॥ ४ ॥
हकूमत तख्त देहली पर क्यामत ही रही आती ।
चली ना पेश कुछ उनकी खजाना जोड़कर धरगये ॥ ५ ॥
हकूमत कर गये देहली बहादुर खांचली जैसे ।
निगाह के सामने जिसके दुलारे नमक जूखर गये ॥ ६ ॥

गाँधी मल्हार

अरी बीबी सारी सहेली चलो संग, कपड़े पे धरना दीजिये। माल विदेशी बिकना बंद हो, अरी बहना चक्र में आवें इंगलिस्तान, कपड़े पे धरना दीजिये। लूटा है भारत देखो किस तरह, अरी बीबी पागल बनाया हिन्दुस्थान। कपड़े पे धरना दीजिये॥ जागन लागे हिन्दवासी नींद से अरी बीबी खुलने लगे सब काम। कपड़े पे धरना दीजिये॥ लेगये सारा धन लूटके, अरी बीबी भारत तो अर की खान। कपड़े पे धरना दीजिये॥ हरगिज न खरीदे माल विदेशी अरी बीबी खद्दर के अब तो बिकते थान। कपड़े पें धरना दीजिये॥ लंकाशायर की हुलिया तंग हो, अरी बीबी मानचेस्टर को निकलें जान। कपड़े पेधरना दीजिये, पीछे कदम अब न हट सके, अरी बीबो चाहे निकल जाय प्रान। कपड़े पे धरना दीजिये॥ घर सेनिकल के हम तो आगई, अरी बीबी घेरो सारी दूकान। कपड़े पे धरना दीजिये॥ हरगिज न गाहक वहां पर आ सकें, अरी बीबी गाँधी का यही फरमान। कपड़े पेधरना दीजिये॥ जै जै माता तुम्हारी जग में जै रहै, अरी माता तुम्हारी करता है 'रत्न" गुणगान। कपड़े पे धरना दीजिये।

मल्हार

अरी बहना हम तुम चले आओ संग झूलेगी चंपा बाग में –

सती डोरी बहना ले चलो. अरी बीबी डोलेगी बाग मझार ॥ झूलेगी चंपा बाग में, बुंदियां भी अब तो नन्ही २ आगई । अरी बीबी सावन की आई बहार, झूलेगी चंपा बाग में ॥ चारों तरफ बादल छा रहे, अरी बीबी काहे लगाओ बार । झूलेगी चंपा बाग में, ठंडी हवा भी देखो चल रही, अरी बीबी मोरा को है खुशी अपार । झूलेगी चंपा बाग मे ॥ डारी पे कोयल बैठी बोलती, अरी बहना गाती है चिड़िया बहार । झूलेगी चंपा बाग में ॥ पी पी तो पपीहा देखो कर रहा, अरी बीबी पड़ी है कैसी फुहार झूलेगी चंपा बाग में ॥ कैसी यह वंशी की बहना तान है, अरी बीबी किसने बजाई जमुना पार झूलेगी चंपा बाग में ॥ इतनी तो सुन के सारी चलदइ अरी बहना पहुची हैं बाग मझार झूलेगी चंपा बाग में ॥ झूला डाला मिल के सब सखी अरी बीबी झूलन का हुई है तैयार झूलेगी चंपा बाग में ॥ धारे २ से झूंठे चल रहें अरी बीबी गायें खड़ी सब मल्हार झूलेगी चंपा बाग में बरिस अब आइ बहना जोरसे अरी बीबी भागे सभी छोड़ छाड़ झूलेगी चंपा बाग में ॥

मल्हार

अरी बहना काहे बैठी हो चुपचाप झंडा तो लेओ हाथ में । दुश्मन तो बहना सर पर छागये अरी बीबी रक्षा करो अपनी आप तेगा तो लेलो हाथ में किसका भरोसा बैठा देखती अरी बीबी दुश्मन से करो दोदो हाथ तेगा तो लेलो हाथ में

प्रतम तो बहना लड़ने जा रहे अरी बीबी तुम भी चलो सब साथ तेगा तो लेलो हाथ में लक्ष्मी बाई दुर्गा की तरह अरी बीबी तुम भी लड़ो दिन रात तेगा तो लेलो हाथ में जलदी निकालो बैरी घर से अरी बीबी वरना करेगा उतपात तेगा तो लेलो हाथ में गांधी बाबा बहना कह रहे। अरी बीबी। चरखा चलाओ दिन रात चरखा तो ले लो हाथ में ॥

तू खन्जर जुल्म का जालिम चलाले और थोड़े दिन

तु ख़ंजर ज़ुलम का ज़ालिम चलाले और थोड़े दिन ।
गरीबों बे गुनाहों को सताले और थोड़े दिन ॥
कसम तुमको मेरे सर की कसर बाकी न रह जावे ।
न मौका फिर मिले ऐसा जलाले और थोड़े दिन ॥
कहीं प्यासी न रह जावे तेरी तलवार ऐ कातिल ।
हमारा खून पानी सा पिलाले और थोड़े दिन ॥
न अरमान कुछ रहे बाकी न हसरत दिलमें रह जावे ।
अभी शमशीर के ज़ोहर दिखाले और थोड़े दिन ॥
लगाले मोल का टीका रहे पहिचान तेरी भी ।
हमें घर में हमारे ही मिटाले और थोड़े दिन ॥
चला अब हिन्द से जल्दा भला कब आयगा फिर फिर ।
आखरी दावतें अब तो उड़ाले और थोड़े दिन ॥
न होगा हिन्द में तू ही हकूमत भी न वह होगी ।
"वियोगी, दाम चन्द्र के चलाले और थोड़े दिन ॥

शहीदों का सन्देश

दिन खून का हमारे प्यारो ! न भूल जाना।

ख़ुशियों में अपनी हम पर आंसू बहाते जाना ॥
सैय्याद ने हमरे चुन चुन के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलियान बाग़ में हम ।
सूनी पड़ी क़ब्र पर दीया जलाते जाना ॥
हिन्दू औ मुसलिमों की दामन भिगोते जाना ।
बहते हमारे रंगमें दामन भिगोते जाना ॥
कुछ क़ैद में पड़े हैं हम कब्र में पड़े हैं ।
दो बूंद आंसू इन पर प्यारे बहाते जाना ॥

अच्छे दिन आने वाले हैं

ऐ मादरे हिन्द न हो ग़मगीन अच्छे दिन आने वाले हैं ।
आजादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ॥
मा तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ जइफ़ी में ।
मायूस न हो मग़रूरों को हम मज़ा चखाने वाले हैं ॥
कमज़ोर हैं और मुफ़लिस हैं हम आफत के पर काले हैं ।
बेकस लाख मगर माता हम आफत के पर काले हैं ॥
हिन्दु और मुस्लिम मिल कर के चाहेजो हम कर सकते हैं ।
ऐ चर्खे कुहन हुशियार हो तू पुरशोर हमारे नाले हैं ॥
मेरी रुह को करना क़ैद क़तल इमकान से बाहर है उनके ।
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़ुबां पर ताले हैं

मग़लूब जो हैं होंगे ग़ालिब महकूम जो हैं होंगे हाकिम ।
सदा एकसा चक्करहा किनका कुदरत के तौर निराले हैं
गान्धी ने तर्क तामाउन का यह कैसा मंत्र चलाया है ।
लरज़ां है जिससे अजंसमां सरकार की आन के लाले ॥

गज़ल

चरखा नहीं है भाईयो यह चक्र है भगवान का ।
शुभ सर्वथा साधन यही है देश के उत्थान का ॥
चरखा बिना यह देश चरखा हो रहा है सर्वथा ।
देखी नहीं जाती यहां अब देश की दुस्तर व्यथा ॥
चिकन मलमल भी रही प्रसिद्ध ढ़ाके की सदा ।
भागल पुरी भी धातीयां प्रख्यात थी यहां पर सदा ॥
जो लोईयां अरु पट्टियां कशमीर में बनती रहीं ।
कम ख्वाब साटन में नहीं काशी की समता थी कहीं
परमात्मा साखी रहे यह बात भी धारण करो ।
अब वस्त्र देशी सूत देशी का सभी धारन करो ॥
नंगे रहे भूखों मरे अरु दाम बहु देना पड़े ।
परमात्मन तो भी विदेशी वस्तु नहीं लेनी पड़े ॥
प्रचार चरखे का करो भारत निवासों प्रेम से ।
नर नार सब चरखे चलावें नित्य ही शुभ नेम से ॥
इस चक्र चर्खे से कभी दुशमन बच सकता नहीं ।
सत्कर्म अरु शुभ शांतिसा शस्त्र क्या होगा कहीं ॥

जो गुड़ खिलाने में मरे तो विस न देना चाहिये।
सुख शांति से स्वाधीनता अरु स्वत्त्व लेना चाहिये॥
बिन्ती द्वारा की यही है देश भारत वर्ष से।
चरखा चलाने में लगें नर नारियां सब हर्ष से॥

गजल

अगर आजाद गैरों से मेरा हिन्दोस्तां होगा।
तो हर एक नौ जवां खुशहाल सतयुग का समा होगा॥
मगर अफ़सोस जकड़ा है गुलामी में मेरा भारत।
वह दिन अब जल्द आता है कि अपना राज यां होगा॥
कहेंगे फिर नहीं जलियाँ में मारो भेड़ बकरों से।
न रोलट एक्ट हो होगा न गैरों का निशां होगा॥
न होगा मार्शला भी अगर आजाद हम होंगे।
इसी भारत में फिर अर्जुन सा हर एक नौजवां होगा॥
बला से जान भी जाये मगर ईमान रह जाये।
हमें होगी खुशी जब ही हमारा खूं खां होगा॥
ये हिन्दी हिन्द के वाली नहीं तोपों से डरते हैं
भला कब तक हमारी ये जमीं और आसमां होगा॥
महात्मा सत्य गाँधी ने चलाया चक्र चर्खे का।
इसी से गैर के अन्याय का बस खातमा होगा॥
फलेंगे और फूलेंगे हमारे बाग़ के बूटे।
पटैल और जवाहर सा हमारा बागवां होगा॥

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग जंग में पकडूंगी तलवार ।

भारत को आज़ाद करूंगी नहीं जेलसे बालम डरूंगी ॥

मारूंगी और वहीं मरुंगी करुं नमक तैंयार ।

प्रीतम चलूं ०

चरखे की मैं तोप बनाऊं बना सूतके गोले चलाऊं ।

मानचेस्टर के किले को ढाऊं पाऊं फतह भरतार ॥

प्रीतम चलूं ०

गांधी जी का हुकम बजाऊं घर घर में उपदेश नाऊं ॥

अपनी बहनों को समझाऊं करूं खूब प्रचार ॥

प्रीतम चलूं ०

नहीं पीछे को कदम हटाऊं नहीं माताका दुध लजाऊं ।

रजपूती का हुनर दिखाऊं कस पांचों हथियार ॥

प्रीतम चलूं ०

अपना पहनूं कता सुदेशी नहीं खरीदूं माल विदेशी ।

सुलह करेंगे तब परदेशी हुआ गरम बाजार ॥

प्रीतम चलूं ०

खादे के सब वस्त्र बनाओ सारी पब्लिक को पहनाओ ।

और मैं रहूं सूत तयार ॥ प्रीतम ० ॥

काल दबावे आय आय ॥ टी०

गजल नं- ६

नहीं पीनी नहीं पीनी शराब जालिम नहीं पीनी।
वेद कुरान इंजील पुकारें, हैं ये बड़ी खराब, जालिम नही पीनी
कोई धर्म इसे भला कहेना, बुरा कहे अहबाब, जालिम नहीं०
पी बेहोश पड़े नाली मे, कुत्ते करें पेशाव, जालिम नहीं पीनी
रण्डी के घर जाय शराबी, औंधा पडा शिताब, जालिम नहीं०
कुत्ते मूंह चाटें गलियों में, मक्खी का बजे रबाब, जालिम नहीं
खून बिगड़ जाय टपकन लागे, खाके पेचो ताब, जालि नहीं०
जब कूडो पे गिरे शराबी, गूका मिले खिजाब, जालिम नहीं०
पेस डी. भूल इसे मतपीना, चाहे मुफ्ती मिले जनाब॥जालिम०

टिड्डी और टोडी नं० ७

किये हैं ताख्त और ता राज सब्जा जार टिड्डी ने ॥
कहां के लाला ओगुल खालिये हैं खार टिड्डी ने
उजाड़ा है इसी खूंखार ने खेतों के रंगों को ॥
दरख्तों को फलों को सब्जियों को और वाग़ों को
किसानों पर मुसिबत है ज़िमी दारों पे आफत है
ग़ज़ब है क़हर है कैसा सितम है क्या क़यामत है ॥
इधर बुलबुल है सर नालां उधर है बागवां गिरयां
ग़रज़ इसकी सितम कैशीसे है सारा जहां गिरयां
मगर है और भी इक जानवर इस दहर फ़ानी में
जो टिड्डी से कहीं हुशियार है एज़ार सानी में
हवा में उड़ नही सकता ज़िमीं पर ही वह जीता है
लहु हिंदुस्तान के चाहने वालों का पीता है

यह इसका फर्ज कुरबानि के फल बरबाद करदेना
यह इसका काम गैरों के दिलों में जहर भर देना
यह खाता है वतन के प्रेम का गुंचा कलो डोडो
इसे अपनी जुबां में कहने वाले कहते हैं डोडी
मुबारिकबाद।

ये धन माता थी जिसने जन्म दिया था पटेलजी तुमको।
किया जो आपने काम मरदाना मुबारिक हो॥
वतन के वास्ते छोड़ा है रुतबा शहन्शाही का।
धर्मकी खातिर अपने ओहदे का ठुकराना मुबारिक हो
दुखो भारत के प्यारे हैं नहीं मैं देख सकता हूं।
इस्तोफा दे हकूमत को यह फरमाना मुबारिक हो
दुख भारत का हरने को है चमका आज यह सूरज।
दिल अन्दर मां की मुहब्बत का बहजाना मुबारिक हो
हैं ऊंचे भाग हम सब के हुये जो आपके दर्शन।
पवित्र आपके चर्णों का यहां आना मुबारिक हो॥
दुआ यही है 'द्वारा' की रहो रोशन सदा जग में।
हमारे सर पे साया यह बुजुर्गाना मुबारिक हो॥

पताः—हरेक दुकानदार से मिलती है